1 - Code no

"सबके साथ सबका विकास"

देश, दुनिया - सब एक ऐसा स्थान जहाँ ~~मनुष्यों~~ मनुष्य रहते है। मानव या मनुष्य एक सामाजिक जीवी है। ये रहनेवाले देश की विशेषताओं में एक है "एकता"। क्योंकि मानव एक सामजिक जीवी है, उसे समाज के बिना रह नहीं सकता। अर्थात् मनुष्य और अन्य जीवीयों तथा समाज ~~के बिना~~ में एक सबंध है।

भारत, एक ऐसा देश जहाँ अनेक विविधताओं में भी एकता कायम रहती है। एकता ही है शक्ति का कारण। जहाँ एकता है वहाँ कायरता नही शक्ति होगा। हमारे देश भारत में अनेक धर्म है, भाषाएँ है, वस्त्र है। लेकिन इन विविधताओ पर भी एक दो नही बल्कि एक है। यही है कारण हमारे देश की प्रगति की।

प्रगति यानी विकास एक जनता की एकता या साथ के कारण ही होता है। शारिरिक, मानसिक, आर्थिक या समाजिक प्रगति ही विकास है। यह तभी सभंव होगा जब जनता के ~~ब~~ बीच एकता हो।

अगर भारत की इतिहास ढूढने पर हमको यह पता चलता है कि भारतवासियों के बीच एकता या साथी के कारण ही हमको आजादी मिला। अग्रेजो जब हमको गुलाम बनाया, उनकी शासन हमपर डाल दिया

तब अगर हम एकता नहीं दिखाया तो शायद हम आज भी आज़ाद नहीं होते। जब अंग्रेज़ो ने भारत को विभाजन करके शासन चलाया तब हम भाषा की, धर्म की, जाति की विविधताओ तथा भेदभावों को भूलकर 'भारतवासियों' के तरह एक बनकर अंग्रेज़ों की हुकूमत से विरोध प्रकट किया। तभी अंग्रेज़ो, जो विश्वजयीता, है भारत को छोड़ा। अर्थात् जहाँ एक की भावना है, जहाँ 'स्वयं' पर नहीं 'सब' पर महत्व दिया, वहाँ शक्ति तथा विजय होगा।

भारत की तरह एकता के, साथी के कारण कई भी देश आज़ाद हुआ। देश में सब व्यक्ति विकास चाहते हैं और उनकेलिए परिश्रम किया तो विकास होगा सिर्फ अपने का नहीं बल्कि उस पूरे देश की।

आज के ज़माने में कई क्षेत्र है जहाँ पर मानव को विकास करना है। मानसिक रूप से आज कोई भी व्यक्ति विकसित नहीं है। यह भी नहीं अपने काम के क्षेत्र, अपने देश, अपने चरित्र - इन सब पर भी व्यक्तियों को विकसित होना चाहिए।

एक देश की विकास तभी संभव होगा जब उस देश की हरेक व्यक्ति शारिरिक, मानसिक एवं आत्मिक रूप से विकसित हो। एक देश की धन उसमे रहनेवाले लोग है। इससे हम पता सकता है कि सबके विकास सबके के साथ ही है।

1-code

हमारे राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी ने कहा था कि -" देश एक पेड है जिसका फल उसके लोग है, अगर फल अच्छा हो तो पेड भी अच्छे होगें"।

आज विश्व में, नारी को अनेक समस्याओं को सामना करना पडता है। तो वो विकसित नही है। अगर एक नारी अपने विकास की ओर कदम उठाया, तो वह बाकी नारीयों को एक नमूना हो जाऊगीं, जिससे कई ओर नारीयों अपने विकास की तरफ कदम उठाऊगी। कल्पना चवला ही वह पहली भारतीय नारी जो ~~आकाश~~ अंतरीक्ष में भी अपना पाव फैलाया। इसके बाद एक ओर भारतीय नारी अंतरीक्ष में गई चवला से प्रेरणा लेकर। तो इतिहास भी गवाह है कि एक ही व्यक्ति जब नमूना हो जाऊगाँ तभी कई ओर व्यक्तियाँ भी उसके पीछे भागेगा।

समाज में अगर सब विकास की ओर अपना हरेक कदम उठाया तब उस समाज की भी विकास होगा तथा उनमें रहनेवाले सभी लोगों को भी होगा। यह भी नही जब देश की प्रधानमंत्री या राष्ट्रपति देश की भलाई के लिए एक योजना या एक कदम रखेगे तब उसमें रहनेवाले सभी व्यक्तियो पर भी उसका असर पडेगे।

~~अगर केरल की बात है, तो~~

केरल "ईश्वर का अपना राज्य" में एक मेट्रो स्थापित करके के.आर.एम. एल केरलवासियों को यातायात का नया दरवाजा खोल दिया। हमारे भारत में तो हमारे प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी ने काफी योजनाएँ जैसे शिक्षा नीति योजना, जवाहर रोजगार योजना आदि शुरु किया। इससे देश की तथा उनमें रहनेवालों की विकास ही होगा।

एक शिक्षिक को भी या विद्यार्थी को भी देशवासियो को विकास करने में असमर्थ नहीं है। आज के विद्यार्थी ही कल की कर्णधार। उन्हे भी समाज में रहनेवाले हर लोगों को विकास की तरफ उठाया जा सकता है अपनी पढाई एवं संस्कारो से।

~~विश्व प्रसिद्ध लेखक~~

देश या सबका विकास सब पर ही निर्भर हो। चाहे वह विद्यार्थी हो, शिक्षक हो, राजनीतिज्ञ हो या समाज में रहनेवाले व्यक्ति हो - सबको सबका विकास कर सकता है।

आज के ज़माने में कई समस्याएँ है जैसे निर्धनता, बेरोजगारी, बाल मजदूर, जनसंख्य में वृद्धि होना .. आदि। इन सबकी वजह से हमारा

1-code

देश, हमारी दुनिया - सब पूर्ण रूप से विकसित नहीं है। अगर यह सब समस्याओं का हल कर दिया तो विकसित होने में इस पूरी दुनिया को कोई भी रोक नहीं सकता। लेकिन आज सबको डर है भ्रष्टाचार के विरोध खड़ा करने के लिए।

कोई भी देश समस्याओं को न सामने कर विकसित नहीं हुए। जब सन् 1945 में जापान पर अमेरिका अणु बोंम गिराया तब जापान पूरी तरह से टूट चुकी थी। लेकिन जापान में रहनेवाले लोगों की कठिन परिश्रम एवं अच्छे मन के कारण आज जापान एक विकसित देश बन चुका है।

जापान का इतिहास हमको यह सीखना या सिखाता है कि देश में रहनेवाले लोगों पर पर स्नेह यानी प्यार, विकसित होने की इच्छुक है तो उस देश में विकास होगा। ऐसा देश दुनिया के सामने नमुना हो जाऊगाँ।

विकास मानव कल्याण के लिए बहुत ही अवश्यक है। एक व्यक्ति विकसित होने होना चार चीजों पर निर्भर है। वे है :-

* खुद की विकास यानी शारिरिक एवं मानसिक रूप से विकास।
* वो रहनेवाले समाज की विकास।
* वो रहनेवाले देश की विकास।
* अपने क्षमता पर।

समाज में अगर एक व्यक्ति आतंकवाद, भ्रष्टाचार या फिर जातिप्रथा से अपना विमुखता प्रकट किया तो वो सबके विकास के ~~लिए~~ कारण हो जाएगा।

आज का युग विज्ञान की युग है। आज कई वैज्ञानिक उपलब्धियाँ हमको मिलता जैसे टी वी, समाचार पत्र, कम्प्यूटर आदि। इन सबका मिलना समाज की प्रगति के लिए अनिवार्य है क्योंकि ये सब ज्ञान एवं विनोद देते हैं जो मानव को अवश्यक है। आलफ्रेड नोबेल जब 'डैनामैट' को इनवेंट या पहली बार उसे निर्माण किया तब उसने भी समाज या मानव की कल्याण के लिए ही उसे उपयोग किया। लेकिन ~~कुछ~~ आज उसे कई ओर ~~कार्यम~~ कार्यक्रमो के लिए उपयोगित करते हैं। तो इससे सिद्ध होता है कि एक ही व्यक्ति को में दूसरे व्यक्तियों को विकास करने में क्षमता है।

महापुरुषो हमको ये सीख देता ही है कि एक ही व्यक्ति को दूसरे की विकास करना होगा। अगर इसे थोड़ा कुछ आगे सोचते तो हमको देख सकता है कि सब के साथ सबका विकास का साधन है।

आज के विद्यार्थी जब कल के प्रधानमंत्री हो, तो अगर वो सबके भलाई के लिए कई जारी योजनाएँ, कई नई हुकूमत दिया तो उसके पीछे उस ~~•~~ सारी देश होगा।

I-code

आज के युवा पीढी दारू या माध्यमों की चगुल में फसकर अपना अस्तित्व असतित्व खोता है। इसे देखकर कई और व्यक्तियाँ पर भी इसपर शामिल हो रहे है। ये विकास नही करता पर देश या व्यक्तियो को अविकास करते है। इसमें एक व्यक्ति अगर दारू छोडने का निश्चय किया है या फिर समाज की प्रगति के लिए नया सीढी लेना तो उसके पीछे सब युवजनो तथा बुजुर्ग भी आते है।

समाज की प्रगति एक पर नही बल्कि सब पर निर्भर है। उनमें से एक अगर कोई वैज्ञानिक तथा तकनीकी उपलब्धि प्राप्त किया तो वो ज़रे समाज में उसका असर दिखेगा।

महात्मा गाधी जो हमारी राष्ट्रपिता है, आज भी करोडों लोग उसको नमूना मानते है। यह इसलिए कि क्योंकि उसकी हर कदम खुद का थाजी देश, के विकास के लिए था। केवल गाधीजी भी नही, इदिरा गाधी, ~~स्टीफन हॉकिंग~~, स्टीफन हॉकिंग, भगत सिह आदि भी दूसरो की विकास के लिए जीते थे।

आज मानव और जानवर पर कोई अंतर नही है। मानव ने भी विवेक को नष्ट कर दिया। आज मानव सम्मान प्राप्त करना चाहता है। दूसरो की ओर प्यार नही क्रोध है। आज के मानव स्वार्थ

है। ईश्वर की याद भी नही करते। अगर सामाजिक तल पर, नारी पर हत्याचार, आतंकवाद, भ्रष्टाचार, दहेज प्रथा, देश प्रेम के अभाव - ये सब नजर आता है। एक व्यक्ति पूर्ण रूप से तभी विकास करेगा जब वह इन समस्याओं या बाधाओं का हल करे। खुद के मन के सोच, खुद ही हल करना होगा। उसके लिए मानव को अच्छी किताबे पढना चाहिए। सामाजिक तल पर जो बाधाएँ है उसको वह खुद से या फिर समाज से दूर करना चाहिए। इससे, तब, मानव को विकास प्राप्त करने के लिए रोकने समस्याओ का हल किया तो जरूर समाज की हरेक व्यक्ति विकसित होगा।

जब एक व्यक्ति विकसित होगा तब एक परिवार विकसित होगा। जब परिवारों विकसित होगा तब समाज विकसित होगा। जब समाज विकसित होगा तब देश और जब देश विकसित होगा तब दुनिया भी विकसित हो जाएँगा। इससे यह कहते है "सबके साथ सबका विकास"।

आज भी कई देशों विकसित नही हुआ। उनमें रहनेवालों की फर्ज है कि देश की या उस देश में रहनेवालो की विकास करू।

I-code

भारत की पहले प्रधानमंत्री श्री जवाहरलाल नेहरू कहते थे - " देश का धन देशवासियों है। अगर उसको विकसित हुआ तब देश की विकास होगा"।

विद्यार्थी ही कल के कर्णधार। इसलिए हमारा फर्ज है कि समाज की हरेक व्यक्ति को विकसित करना। उसके द्वारा पूरे पूरे दुनिया को विकास करने में हम सफल होंगे। भारत की आदर्श वाक्य "वसुधैव कुटुम्ब" की तरह इस दुनिया हमारी ही परिवार हो। उसका विकास के द्वारा हमारा विकास ही होगा।